# मोक्षसंन्यासयोग

## (गीता का निष्कर्ष)

**अर्जुन उवाच।**
**संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्।**
**त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन।।१।।**

**अर्जुनः उवाच**=अर्जुन ने कहा; **संन्यासस्य**=संन्यास के; **महाबाहो**=हे महाबाहु श्रीकृष्ण; **तत्त्वम्**=तत्त्व को; **इच्छामि**=चाहता हूँ; **वेदितुम्**=जानना; **त्यागस्य**=त्याग के; **च**=भी; **हृषीकेश**=हे इन्द्रियों के स्वामिन्; **पृथक्**=विभाग से; **केशिनिषूदन**=हे केशीहन्ता।

### अनुवाद

अर्जुन ने कहा, हे महाबाहु! हे हृषीकेश! हे केशीहन्ता (श्रीकृष्ण)! मैं त्याग और संन्यास के तत्त्व को अलग-अलग जानना चाहता हूँ।।१।।

### तात्पर्य

श्रीमद्भगवद्गीता वस्तुतः सत्रह अध्यायों में समाप्त हो जाती है। यह अट्ठारहवाँ अध्याय पूर्व वर्णित विषयों का साररूप परिशिष्ट है। प्रत्येक अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण ने भगवद्भक्तियोग को जीवन का परम लक्ष्य कहा है। इसी भक्तिमार्ग का यहाँ सारांश में परम गोपनीय ज्ञान-पथ के रूप में वर्णन है। पहले छः अध्यायों में